विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत 4 सितंबर 2020

वर्ग सप्तम राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

मिथिला में वीरेश्वर नाम के मंत्री थे। स्वभाव से दानशील एवं कारूणिक वे सभी निर्धनों एवं अनाथो की प्रतिदिन इच्छा भोजन दान करते थे। उनके बीच आलसी भी अन्न एवं धन का दान करवाते थे। क्योंकि बुद्धिमानों के मत के अनुसार सभी खराब स्थिति वालों में आलसी प्रथम है, कुछ तो उदर से जलते होने के बाद कुछ नहीं करते।

इसके बाद आलसीयों के खुद को देख कर धूर्त बनावटी आलस्यं को देखकर भोजन को ग्रहण करने लगे। इसके बाद आलसी भवन के बहुत धन खर्च को देखकर वहाँ नियुक्त पुरुषों के द्वारा सलाह किया गया - कि अक्षमबुद्धि के द्वारा कुरूणा से केवल आलसीयों को ही स्वामी वस्तुओं का दान करवाता है, कपट से जो आलसी नहीं है वह सभी ग्रहन कर रहे हैं यह हम सबों की लापरवाही है। यदि ऐसा होता है तो, हम लोग आलसी भवन में अग्नि का दान करवा कर वहाँ नियुक्त सिपाही छुप गये।

इसके बाद उन चारों के इस प्रकार बातचीत को सुनकर और अग्नि को इनके और बढ़ाता हुआ देखकर नियुक्त सिपाहियों के द्वारा चारों अलसीयों के केशो को पकड़कर खींचने हुए घर से बाहर किया गया इसके बाद उन नियुक्त सिपाहियों के द्वारा पढ़ा गया -

स्त्रियों की गति पति है, बच्चों की गति माँ है। लेकिन आलसीयों की गति कारूणिकों (दयालुओं) के बिना कोई नहीं है।

इसके बाद उन आलसियों मंत्री ने अधिकतर वस्तुओं का दान करवाया।